

## हृदल-डुरशररत देशरर के सरथ संबंघ आसरन नहरर

यह एडलटोरलल 09/06/2022 को 'द हृदल' में डुरकरशतल "Dealing with the Indo-Pacific is not Easy" लेख डुर आधररतल है। इसमें हृदल-डुरशरत कषेडुर के डुरडुख डु-रररननरतकल डुनररतलररर के डुरे में डुररर के गरर के गरर है।

हल के समय में डुरडुख वशलव शकुरतलरर ने अडुनर धुनर संघरष के अनुड कषेडुरर से हृदल-डुरशरत डुरररसरर कषेडुर के ओर सुथरनरंतरतल कडुर है। इसकर सबसे डुरडुख कररण [दकषणल डुन सररर](#) में डुन के आकुरररडुकरतल है जहर वुह सुथररडुत संडुकुरत ररषुडुर अडुसरडुडुओओ ओर अंतररररषुडुरीडु सडुडुरी करनूओओ को धुतर डुरतरते हूडु संडुररुण सडुडुरी कषेडुर डुर हरवी होने के अडुनर डुशर डुरककुर कर रहर है।

हृदल-डुरशरत कषेडुर कर वरतडुन डु-रररननरतकल डुरदृशुडु कषेडुर को असुथरल करने वरले डुरडुख अडुडुनर से डुरर हूआ है। डुरवषुडु के गहन एकीकरण हेतु आधर तैडुरर करने ओर अंतररररषुडुरीडु करनून के तहत एक अधकलर के रूडु में सडुी देशर के लडुल वैशुवकल कलडुण तक एकसडुन डुरुडुडु सुनशुडुतल करने हेतु सररर डुन करण सुथररडुतल करने के आवशुडुकरतल है।

## हृदल-डुरशरत कषेडुर में हल के डु-रररननरतकल डुरगतल

- **अडुरेकरल के हृदल-डुरशरत रणनीतल:** हल ही में अडुरेकरली डुरशरसन ने अडुनर डुरल-डुरतीकषुतल हृदल-डुरशरत रणनीतल के घुषणर के है जो इस कषेडुर के डुनररतलरर से नडुडुने के लडुल सरडुुहकल कषुडुतल के नररडुण डुर केंडुरतल है।
  - इनमें डुन के डुनररतलरर डुर धुनर केंडुरतल करनर, अडुरेकरली संबंघुओओ को आगे डुरदुनर, **डुरर के सरथ एक 'डुरडुख रकषर सरररदररी'** को वकलसतल करनर ओर कषेडुर में एक '**शुदुध सुरकषर डुरदरतर**' के रूडु में **डुरर के डुडुकरल कर सरडुथन करनर** शरडुलल है।
- **डुरुरुरीडु संघ के हृदल-डुरशरत रणनीतल:** **डुरुरुरीडु संघ (EU)** डुी हल ही में एक हृदल-डुरशरत रणनीतल लेकर आडुर है जो वुडुडुकल दृषुतकलण के सरथ अडुनर संलगुनतर डुरदुने डुर लकषुतल है।
  - डुरुरुरीडु संघ डुरले से डुी सुवुडु को ओर हृदल-डुरशरत कषेडुर को '**डुररकुरतकल डुरररदरर कषेडुरर**' (Natural Partner Regions) के रूडु में देखतर है।
  - यह हृदल डुरररसरर के तडुवरती ररररुओओ, **आसडुनर** कषेडुर ओर डुरशरत दुवीडु ररररुओओ में एक डुरहतुतुवडुररुण अडुकररुतुतर रहर है।
- **AUKUS सडुुह:** सतलडुर 2021 में अडुरेकरल ने हृदल-डुरशरत के लडुल एक नई तुरडुडुकीडु सुरकषर सरररदररी के घुषणर के जसलडुमें **ऑसुडुरेलडुल, डु.के. ओर अडुरेकरल (AUKUS)** शरडुलल है।
  - सुरकषर सडुुह AUKUS हृदल-डुरशरत कषेडुर में रणनीतकल हतलरर को आगे डुरदुने डुर धुनर केंडुरतल करेगल।
    - इस सडुुह के अंतरगत ऑसुडुरेलडुल के सरथ अडुरेकरली **डुरडुण डुनडुडुडी डुररदुडुगकल के सरररदररी** एक उल्लेखनीडु घकनरकरडु है।
- **हृदल-डुरशरत आरुथकल दुरररर:** इस डु-डुरर कर लगडुग डुरतुडुेक देश डुी डुन के डुरखरतर ओर आकुरररडुकरतल को डुरहलनतल करतर है।
  - डुन से नडुडुने के लडुल अडुरेकरल ने हल ही में टुकुडुओओ में आडुओजतल **कुरररर शखलर सडुुडुेलन** में **हृदल-डुरशरत आरुथकल दुरररर** (Indo-Pacific Economic Framework- IPEF) लररनुडु कडुरल तरकर इस कषेडुर को अडुने वकलस लकषुडुओओ के डुररतल हेतु डुरेहतर वकललुडु डुरदुन कडुरल जर सकें।
  - **IPEF डुरर डुरडुख सुतडुडुओओ के सुसंडुओन में कररुडु करेगल:**
    - उऑलल वुडुडुडुर के लडुल डुनक एवु नडुडुडु;
    - डुरतुडुसरुथी आडुररतल शुरुखलर;
    - हरतल उररर डुरतडुडुधतररुओओ; ओर
    - नुडुडुसंगत वुडुडुडुडु

## कुररु डुरहतुतुवडुररुण है हृदल-डुरशरत?

- हृदल-डुरशरत कषेडुर में दुनडुल के आधी से अधकल आडुडी कर वरस है जहर 2 डुललडुन से अधकल लुग लुकतररतुरकल शरसन में रहते हैं।
- यह कषेडुर वशलव के आरुथकल उतुडुडुन में एक तहररु डुगदरन करतर है जो वशलव के कसलर डुी अनुड कषेडुर के डुगदरन के तुलनर में अधकल है।

- संयुक्त राज्य अमेरिका के तीन सबसे महत्वपूर्ण सहयोगी- जापान, दक्षिण कोरिया और ऑस्ट्रेलिया इसी भू-भाग में अवस्थित हैं।
- विश्व का एक तहनाई से अधिक विदेशी व्यापार इसी क्षेत्र में संपन्न होता है।
- दुनिया की कुछ सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाएँ, जैसे चीन, भारत, जापान, इंडोनेशिया, दक्षिण कोरिया, थाईलैंड, ऑस्ट्रेलिया, ताइवान, मलेशिया और फिलीपींस हिंदी-प्रशांत क्षेत्र में ही अवस्थित हैं।

## हिंदी-प्रशांत क्षेत्र में मौजूद प्रमुख चुनौतियाँ

- कुछ देशों की आक्रामक नीतियाँ: हिंदी-प्रशांत क्षेत्र, विशेष रूप से पूर्वी एशिया, एक दबाव का सामना करता रहा है। **दक्षिण कोरिया और जापान को उत्तर कोरिया की ओर से नयिमति रूप से परमाणु एवं मिसाइल खतरों का सामना** करना पड़ रहा है।
  - चीन भी न केवल दक्षिण चीन सागर में अंतरराष्ट्रीय समुद्री कानूनों को चुनौती देता रहा है, बल्कि **सेनकाकू द्वीप** को लेकर जापान से संघर्ष रखता है।
  - चीन और ताइवान सहित छह देश **सुपेरटली द्वीप समूह** को लेकर विवाद में संलग्न हैं, जिसके बारे में अनुमान है कि वहाँ तेल और प्राकृतिक गैस का विशाल भंडार मौजूद है।
  - चीन ने विवादित द्वीपों, समुद्री टापुओं और **परवाल भूतियाँ** के कुछ हिस्सों का कठोरता से सैन्यीकरण किया है और वयितनाम एवं फिलीपींस जैसे देश इस होड़ में पीछे नहीं रह जाने को लेकर इच्छा रखते हैं।
- चीन के विरुद्ध कार्रवाई करने की अनिच्छा: इस बात की अपनी सीमा है कि इस क्षेत्र के कौन-से देश चीन विरोधी आर्थिक या रणनीतिक बग़्धी पर सवार होना चाहेंगे।
  - पूर्व, दक्षिण पूर्व या दक्षिण एशिया के प्रत्येक देश का चीन के साथ अपना एक अलग संबंध है।
  - हालाँकि **दक्षिण कोरिया और जापान एक प्रबल अमेरिकी सुरक्षा/रणनीतिक साझेदारी का अंग** हैं, लेकिन वे चीन के साथ अपनी आर्थिक स्थिति बनाए रखने के इच्छुक होंगे।
    - **आसियान देशों** पर भी यही बात लागू होती है।
  - **भारत क्वाड का भागीदार** होने के बावजूद इस बात को लेकर पर्याप्त सचेत है कि वह **इस समूह का एकमात्र देश है जो चीन के साथ भूमि सीमा साझा करता है** जो विवादों से घिरा हुआ है।
- **IPEF से जुड़े मुद्दे**: पहला संकेत यह है कि भले ही IPEF एक अच्छा विचार हो सकता है, लेकिन इस बात को लेकर असंतोष है कि यह ढाँचा व्यापार और टैरिफ संबंधी मुद्दों को संबोधित नहीं करता है।
  - इसके साथ ही, चूँकि अमेरिका की पछिली पहलों— **‘ब्लू डॉट नेटवर्क’** और **‘बलिड बैंक बटर वर्ल्ड’ (B3W)** ने इस क्षेत्र की ढाँचागत आवश्यकताओं की पूर्ति में बहुत कम प्रगति दिखाई, IPEF को विश्वसनीयता की चुनौती का सामना करना पड़ रहा है।

## हिंदी-प्रशांत की स्थिरता के लिये क्या आवश्यक है?

- **प्रबल कार्रवाइयों पर विचार**: भू-राजनीतिक तनावों की प्रतिक्रिया में देशों ने मुक्त व्यापार एवं निवेश प्रवाह से प्राप्त आर्थिक लाभ की तुलना में **प्रत्यास्यता एवं राष्ट्रीय सुरक्षा के विचारों पर अधिक बल** दिया है। आवश्यक है कि वास्तविक रूप में **संघर्ष उत्पन्न होने से पहले ही चरम उपायों की ओर आगे बढ़ने की प्रवृत्ति के प्रति अत्यंत सतर्क** रहें।
  - चाहे वैश्विक आपूर्ति शृंखलाओं से स्वयं को अलग करना हो अथवा **‘रीशोरिंग’** या **‘फरेंड-शोरिंग’** की ओर आगे बढ़ना हो अथवा उन देशों से संबंध विच्छेद करना हो जो सहयोगी या मित्र नहीं हैं— ऐसी कार्रवाइयाँ क्षेत्रीय विकास एवं सहयोग के रास्ते बंद कर देंगी, देशों के बीच मतभेद को गहरा करेंगी और वस्तुतः उन संघर्षों को तेज़ ही कर देंगी जिन्हें टाले जाने की आवश्यकता थी।
  - अगले दशक में ऐसी घटनाएँ (जैसे विवादित क्षेत्रों को लेकर वृहत अंतर-राज्यीय संघर्ष) सामने आ सकती हैं जिनका इस क्षेत्र पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ेगा।
    - हिंदी महासागर में अपने हितों को बढ़ावा देने और उनकी रक्षा करने के लिये भारत द्वारा उचित नीतियों और कार्यान्वयनों को अपनाने की आवश्यकता है।
- **साझा मानकों की स्थापना**: हतिधारकों को **साझा मानकों की स्थापना पर तात्कालिक ध्यान** देना चाहिये जो भविष्य में गहन एकीकरण हेतु आधार का निर्माण कर सकते हैं।
  - इन मानकों में **श्रम अधिकार, पर्यावरण मानक, बौद्धिक संपदा अधिकारों की संरक्षा और डिजिटल अर्थव्यवस्था को कवर करने वाले नयिम** शामिल होंगे।
- **शांति स्थापना के लिये पहल**: इस क्षेत्र के देशों को समुद्र और वायु क्षेत्र में साझा स्थानों के उपयोग के संबंध में एकसमान पहुँच प्राप्त हो और यह पहुँच अंतरराष्ट्रीय कानून के तहत अधिकार के रूप में प्राप्त हो। इसके लिये **अंतरराष्ट्रीय कानून के अनुरूप नेविगेशन की स्वतंत्रता, अबाधित वाणज्य और विवादों के शांतिपूर्ण समाधान की आवश्यकता** होगी।
  - संप्रभुता एवं क्षेत्रीय अखंडता, परामर्श, सुशासन, पारदर्शिता, व्यवहार्यता और स्थिरता का सम्मान करते हुए **क्षेत्र में कनेक्टिविटी स्थापित करना महत्वपूर्ण** है।
- **संयुक्त हिंदी-प्रशांत रणनीति**: सभी हतिधारक देशों के साथ संबंधों को सुदृढ़ करने के लिये विभिन्न देशों द्वारा हिंदी-प्रशांत रणनीतियों को स्वयं ही विकसित करना होगा।
  - जनि प्रमुख मुद्दों को संबोधित किये जाने की आवश्यकता है, उनमें **रक्षा सहयोग में सुधार** प्रमुख है ताकि एक-दूसरे की सैन्य क्षमताओं को सुदृढ़ किया जा सके, बाह्य सैन्य खतरे को कम किया जा सके, आर्थिक सहायता को बढ़ावा दिया जा सके और ओज़ोन रक्षितकरण एवं **ग्रीनहाउस उत्सर्जन** जैसे चिंताजनक पर्यावरणीय मुद्दों पर विचार किया जा सके।
  - अमेरिका, भारत, जापान, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण कोरिया, इंडोनेशिया और ताइवान वे प्रमुख देश होंगे जिन्हें सहयोग बढ़ाने तथा चीन की चुनौती का मुकाबला करने के लिये साथ आने की आवश्यकता होगी।

**अभ्यास प्रश्न:** “वर्तमान में भारत की भागीदारी रणनीतिक हितों और एक नए सुरक्षा वातावरण के अभिसरण पर नयिमति है। इस रूप में हिंदी-प्रशांत

क्षेत्र वैश्विक स्तर पर भारत की स्थिति और भूमिका को बढ़ावा देने का अवसर प्रदान कर रहा है।” टपिपणी कीजयि ।

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/dealing-with-indo-pacific-countries>

